पसंद का अध्यक्ष नहीं बना पाएंगे शिवराज

मोघे, महाजन, विजयवर्गीय और मिश्रा दौड़ में

नई दिल्ली । मप्र में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के लिए नामों की तलाश शुरू हो गई है। वर्तमान अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर लोकसभा के लिए निर्वाचित हो गए हैं। लोकसभा चुनाव परिणाम मप्र में भाजपा के लिए अपेक्षित नहीं रहे। मालवा अंचल में भाजपा को करारी शिकस्त मिली है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में संगठन की कमान किस को सौंपी जाए। इसको लेकर भी राष्ट्रीय स्तर के तथा प्रदेश के केन्द्रीय नेताओं के बीच विचार मंथन शुरू हो गया है। सूत्रों के अनुसार इस बार मुख्यमंत्री को अपने मन पसंद प्रदेश अध्यक्ष को लाने का मौका भाजपा के ही शीर्ष नेता नहीं देना चाहते हैं। सत्ता पर पकड़ मजबूत करने के लिए संगठन ताकतवर बनाने की बात करी जा रही हैं इस प्रयास में किसको कितनी सफलता मिलेगी यह तो समय ही बताएगा।बहरहाल जिन नामों पर चर्चा चल रही हैं। उनमें सांसद सुमित्रा महाजन पूर्व सांसद कृतण मुरारी मोघे, अनिल दुबे ब्रिजेन्द्र सिंह सिसोदिया, प्रभात झा, कैलाश विजयवर्गीय तथा अनूप मिश्रा के नाम सामने आए हैं।मप्र के स्वास्थ्य मंत्री अनूप मिश्रा सार्वजनिक रूप से संगठन की जिम्मेदारी लेने की मंशा जता चुके हैं। वहीं वाणिज्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को भी प्रदेश अध्यक्ष का सशक्त दावेदार माना जा रहा है।राष्ट्रीय स्तर भी अस्थिरता का दौर चल रहा है। ऐसे में यह कहना मुश्किल है कि उपरोक्त नामों में किसका पलड़ा भारी है। नवम्बर माह में पार्टी के अध्यक्ष का चुनाव तय कार्यक्रम के अनुसार होना हैं। किन्तु पार्टी में जिस तरह इस्तीफों का दौर चल रहा हैं उससे दबाव की राजनीति करने में कोई गुट अपनी कोर-कसर नहीं छोड़ रहा है। जिसके फलस्वरूप अध्यक्ष पद को लेकर भी दबाव बनाने और आंख मिचौली का नया खेल मप्र में शुरू हो गया है।

चर्चित रहा संघ का महाकौशल सम्मेलन

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने हाल ही में महाकौशल स्तरीय एक सम्मेलन का आयोजन जिला मुख्यालय सिवनी में किया। यह सम्मेलन देश की राजनैतिक राजधानी दिल्ली तक में चर्चा का विषय बना। हुआ यह कि संघ के इस कार्यक्रम के अंतिम दिन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सिवनी शहर में रहने के बावजूद भी उन्होंने इस कार्यक्रम मे शिरकत नहीं की। वे आधे रास्ते से ही अपने उड़न खटोले की ओर गए और राजधानी भोपाल के लिए उड़ लिए। इसके उपरांत स्थानीय मिशन उच्चतर माध्यमिक शाला में आयोजित सम्मेलन में भी शाला के शिखर पर संघ के भगवा ध्वज को देखकर लोग यह कहने से नहीं चूके कि कहीं यह संघ का संघ से इतर विचारधारा के साथ मिलाप तो नहीं!

पहले पेज से जारी...

चिट्ठियों के हमलों से परेशान राजनाथ सिंह ने हार की ली जिम्मेदारी

भारतीय जनता पार्टी में मचा धमासान और तेज हो गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक से ऐन पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ नेता अरूण शौरी ने अध्यक्ष राजनाथ सिंह को चिट्ठी लिखकर कई सवाल उठाए हैं। जसवंत सिंह, यशवंत सिंहा, अरूण जेटली के बाद चिट्ठी लिखकर सवाल उठाने वाले श्री शौरी, चौथे वरिष्ठ नेता है। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा है कि लोकसभा चुनाव में हार पर बहस हो रही है, लोग अपनी बातें कह रहे हैं, लेकिन हार की जिम्मेदारी तय क्यों नहीं हो रही है। पार्टी के फैसले गोपनीय क्यों रखे जाते है, पारदर्शिता क्यों नहीं बरती जा रही है। अहम बैठक में अरूण जेटली क्यों मौजूद नहीं रहेंगे और जब वरिष्ठ नेता चिट्ठी लिखकर सवाल खड़े करते हैं तब पार्टी उन्हें पत्र के माध्यम से जवाब क्यों नहीं देती।

श्री शौरी ने कहा है कि पार्टी के फैसलों में पारदर्शिता होनी चाहिए। अगर ऐसा होता है तो पार्टी के जिम्मेदार नेता अपनी बात पार्टी फोरम में अच्छे ढंग से रख सकेंगे। उन्होंने जेटली की विदेश यात्रा पर भी सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा है कि इतनी अहम बैठक में अरूण जेटली क्यों नहीं रहेंगे। क्या पार्टी ने इस पर विचार किया है। श्री शौरी ने यह भी लिखा है कि पार्टी के नेता जब नेतृत्व से प्रश्न करते है या चिट्ठी लिखते है तो इसका जवाब उन्हें मिलना चाहिए। यह उनका अधिकार है। अरूण शौरी के पत्र से पार्टी में खलबली मच गई है। उन्होंने ऐसे समय में राष्ट्रीय नेतृत्व को कटघरे में खड़ा किया है जब पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक होने जा रही है और तमाम नेता दिल्ली में जुटे हुए हैं। भाजपा सूत्रों के अनुसार शौरी का यह पत्र पार्टी की हाल ही में हुई एक बैठक में उठाने की कोशिश की गई थी लेकिन राजनाथ सिंह ने इसके वहां वितरण पर कड़ाई से रोक लगा दी थी। शौरी के इस पत्र से भाजपा में बवंडर की स्थिति है। कुछ राज्यों ने प्रस्तावित विधानसभा चुनावें के ऐन पहले भाजपा में राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के बीच आरोप-प्रत्यारोप और कीचड़ उछालने की घटनाओं से पार्टी का '**पार्टी विद डिफरेंस**' का वाक्य राजनीतिक हलकों में नए अर्थों में समझा जाने लगा है। ए। उधर लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष लालकृष्ण आडवाणी का खेमा पार्टी नेतृत्व पर इस बात के लिए सतत दबाव बना रहा है कि चुनाव में पार्टी की करारी हार की नैतिक जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति पर डालने की बजाए सामूहिक रूप से ली जाए। चुनाव के मुख्य रणनीतिकार अरूण जेटली हाल ही में कुछ भाजपा नेताओं के निशाने पर थे। इसी के चलते जेटली ने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा देकर इंग्लैंड की राह पकड़ ली थी।

काले काम आखिर पाप वृत्ति हैं!

चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

आयएएस के एक अफसर इन दिनों गंभीर आरोप में फंसे है. उन पर 'गे' होने का आरोप है. 'गे' का मतलब अब कोई नया नहीं है हर कोई जानता है पुरूष के पुरूष से अंतरंग संबंध ही 'गे' है. ऐसे संबंधों का भद्र समाज में कहीं कोई स्थान नहीं है. यह न हमारे संस्कार है, न संस्कृति और न सभ्यता. इसलिये ऐसे मामले वाकई गंभीर है.

गंभीर मामले कई तरह से गंभीर अर्थ लिये होते हैं. उसमें गंभीर सवाल होते है और गंभीर संदेश छिपे होते हैं. इसलिये ऐसे मामलों की गंभीरता अधिक होती है. भोपाल के पंचायत दफ्तर में कथित 'गे' वारदात भी ऐसा ही गंभीर मसला है. हालांकि खबरों के चलित चैनलों ने इसे अधिक मसालेदार बना दिया है, फिर भी कैमरा लेकर बाथरूम के भीतर पहुंचे खबरदारों ने एक आयएएस अफसर को 'अर्धवस्त्रहीन' दिखाया हैं. इससे मामले की गंभीरता और बढ़ गई है.

'**गे**' पता नहीं कितने और किस तरह के लोग होते हैं. लेकिन जितने भी होते होंगे संख्यात्मक कम और छिपे होते होंगे. लेकिन कोई ओहदेदार व्यक्ति इस तरह 'गे' हो यह कम जंचता है. जिस पंचायत सचिव के साथ आयएएस अफसर को 'गे' होना दिखाया गया है वहां सिर्फ बाथरूम के भीतर की सच्चाई है वह यह कि कथित अफसर वहां पूरे वस्त्र में नहीं थे. हर बाथरूम में भीतर की सचाई यही होती है जहां हमाम में सभी नंगे होते. सवाल असलियत का है.

असलियत कई बार ठीक से पहचानी या दिखाई नहीं जाती. षड्यंत्रों के चक्कर में भी असलियत छिप जाती है. हर व्यक्ति कहीं न कहीं किसी तरह से छोटे-बड़े षड्यंत्रों का शिकार होता है, तब ये षड्यंत्र असलियत पर भारी पड़ जाते हैं और व्यक्ति उसमें फंस जाता है. उक्त आयएएस अफसर के कथित 'गे' मामले की असलियत जब भी सामने आए तो अपनी कामना है कि वह अफसर षड्यंत्र के शिकार ही नजर आएं. ऐसा इसलिये भी **आयएएस अफसर हर सरकार की नाक होते हैं, व्यवस्था में वे स्वयं प्रारूप होते हैं और कानून के पालनकर्ता होते हैं. उन्हें एक शिष्ट सम्मान दृष्टि लोगों से मिलती है और लोग उन्हें वाकई अपना अफसर समझते हैं. कोई भी युवा आयएएस 'सर' के मानद से कम नहीं होता.**

'**सर**' शब्द अंग्रेजी के शब्दकोष में संबोधन की प्राथमिक शिष्टता है, यह अंग्रेजों से आई है. जिसे 'सर' कह दिया जाता है वह स्वयं बड़ा हो जाता है और माननीय हो जाता है. माननीय वही जिसकी बात मानी जा सके. आयएएस अफसर ऐसे ही माननीय हैं. फिर उन पर ओछे आरोप आते हैं तो विश्वास नहीं होता. जब विश्वास नहीं होता हो उसकी पड़ताल की जाती है. विश्वास बना रहे यह उम्मीद की जाती हैं.

भद्र सामाजिक व्यवस्था पर इस मामले से जो कीचड़ उछली है उस पर उम्मीद की जाना चाहिए कि पड़ताल के बाद विश्वास फिर सजग हो उठेगा और हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा संस्कार पर किसी तरह की आंच नहीं आयेगी. हर छिपी हुई चीज बाहर आएगी और नकाब हटेगा. असलियत उजागर होगी इस उम्मीद के साथ दफ्तर के भीतर किसी कलंक की संरचना नहीं हुई. क्योंकि हर दफ्तर कार्यस्थल मंदिर की तरह पवित्र स्थान होता है जो दफ्तर में बैठकर काले काम करते हैं उनकी वृत्ति वाचाल होती है. यही वृत्ति उन्हें पाप वृत्ति की ओर ले जाती है. काले काम आखिर पाप वृत्ति ही है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८